



2026:AHC: 61554

इलाहाबाद उच्च न्यायालय

आपराधिक अपील संख्या - 7097/2023

शिव प्रकाश

.....अपीलार्थी(गण)

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य और एक अन्य

.....प्रत्यर्थी(गण)

अपीलार्थी(गण) के अधिवक्ता

: अजय प्रताप सिंह, विजय त्रिपाठी

प्रत्यर्थी(गण) के अधिवक्ता

: शासकीय अधिवक्ता, राजीव कुमार

न्यायालय संख्या - 93

माननीय न्यायमूर्ति श्रीमती वानी रंजन अग्रवाल

1. अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता श्री अजय कुमार पांडेय; विपक्षी के विद्वान अधिवक्ता श्री राजीव कुमार और राज्य के लिए विद्वान अपर शासकीय अधिवक्ता श्री राहुल अस्थाना को सुना तथा अभिलेख पर उपलब्ध सामग्री का परिशीलन किया।
2. यह दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 454 के अंतर्गत अपीलकर्ता, शिव प्रकाश द्वारा प्रस्तुत एक अपील है, जो सत्र परीक्षण संख्या 192 वर्ष 2012 में एक अभियुक्त था।
3. मामले के तथ्य संक्षेप में यह हैं कि अपीलकर्ता स्वर्ण आभूषणों, अर्थात् चार चूड़ियों, एक हार का एक सद्भावपूर्ण क्रेता होने का दावा करता है। यह कहा गया है कि अपीलकर्ता के विरुद्ध अपराध संख्या 109 वर्ष 2013 के रूप में प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज की गई है। अभियोजन के मामले के अनुसार, हरि ओम द्वारा प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी जिसमें यह आरोप लगाया गया है कि 3.4.2012 को दोपहर लगभग 12:30 बजे सह-अभियुक्त व्यक्ति अर्थात् हेमा, बब्बू उर्फ प्रदीप और तारा उर्फ टरिया आए और शिकायतकर्ता की मोटरसाइकिल को रोक लिया तथा बंदूक की नोक पर शिकायतकर्ता की बहन से आभूषण छीन लिए और भाग गए। यह आगे

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



कहा गया है कि अपीलकर्ता का नाम प्रथम सूचना रिपोर्ट में नहीं था और उसका नाम विवेचना के दौरान प्रकाश में आया है। विद्वान विचारण न्यायालय ने साक्ष्य पर विचार करने के पश्चात सत्र परीक्षण संख्या 192 वर्ष 2012 में निर्णय और आदेश दिनांक 2.2.2018 पारित किया है, जिसके द्वारा अपीलकर्ता को विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा दोषमुक्त कर दिया गया है और विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा अपराध में उसकी संलिप्तता नहीं पाई गई। यह आगे कहा गया है कि घटना के तुरंत बाद अपीलकर्ता के प्रश्नगत आभूषणों को विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा हिरासत में ले लिया गया था और इसे विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा वाद संपत्ति के रूप में माना गया था। अब विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा निर्णय और आदेश पारित किए जाने के बाद अपीलकर्ता को दोषमुक्त कर दिया गया है। तत्पश्चात, विचारण के निष्कर्ष के बाद, अपीलकर्ता ने दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 452 के अंतर्गत दाखिल एक प्रार्थना पत्र के माध्यम से अपने स्वर्ण आभूषणों को मुक्त कराने के लिए आवेदन किया। उक्त प्रार्थना पत्र को विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा केवल इस आधार पर खारिज कर दिया गया है कि प्रश्नगत आभूषण शालिनी जो कि शिकायतकर्ता की बहन है के हैं और अपीलकर्ता ने अपने दावे के समर्थन में कोई स्टॉक रजिस्टर, बिल या कैश मेमो प्रस्तुत नहीं किया है। इसलिए, इसके दृष्टिगत, प्रश्नगत आभूषणों को मुक्त करना उसके लिए खुला नहीं था। इन परिस्थितियों में, अपीलकर्ता ने इस न्यायालय के समक्ष दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 454 के अंतर्गत यह अपील प्रस्तुत की थी।

4. हरि ओम सिंह जो कि वाद के शिकायतकर्ता हैं की ओर से उपस्थित विद्वान अधिवक्ता श्री राजीव कुमार ने निष्पक्ष रूप से प्रस्तुत किया है कि अभियोजन गवाह-2/पीड़िता जो सूचक की बहन है, का विद्वान विचारण न्यायालय के समक्ष परीक्षण किया गया था और विचारण के दौरान उसने कहा है कि प्रश्नगत आभूषण उससे संबंधित नहीं थे, इस संबंध में प्रतिशपथ पत्र के प्रस्तर संख्या 6, 11 और 13 का संदर्भ दिया गया है। इस प्रकार, यदि प्रश्नगत आभूषण अपीलकर्ता के पक्ष में मुक्त किए जाते हैं तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं है।

5. अपीलकर्ता के अधिवक्ता का तर्क है कि प्रश्नगत आभूषण अपीलकर्ता द्वारा खरीदे गए थे और सत्र परीक्षण संख्या 192 वर्ष 2012 के संबंध में भौतिक प्रदर्श हैं, जिसके विरुद्ध कोई आपराधिक अपील प्रस्तुत नहीं की गई है और अपीलकर्ता यद्यपि एक अभियुक्त था, लेकिन विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा उसे दोषमुक्त कर दिया गया था।

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



6. उनका आगे का प्रस्तुतिकरण यह है कि अपीलकर्ता के पक्ष में प्रश्नगत आभूषणों को मुक्त करने में कोई बाधा नहीं है क्योंकि वे अपीलकर्ता के हैं और वह एक वचनपत्र देने के लिए तैयार है या न्यायालय यह शर्त लगा सकता है कि वह प्रश्नगत आभूषणों में कोई बदलाव नहीं करेगा।

7. अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता ने हमारे समक्ष **सुंदरभाई अंबालाल देसाई बनाम गुजरात राज्य 2002 (10) एस.सी.सी. 283** में माननीय सर्वोच्च न्यायालय का एक निर्णय प्रस्तुत किया है। जिसके प्रासंगिक अंश नीचे उद्धृत किए जा रहे हैं:-

"12. इस उद्देश्य के लिए, यदि अभिलेख पर उपलब्ध सामग्री यह इंगित करती है कि ऐसी वस्तुएं उस शिकायतकर्ता की हैं जिसके घर पर चोरी, लूट या डकैती हुई है, तो जब्त की गई वस्तुएं निम्नलिखित के बाद शिकायतकर्ता को सौंप दी जाएं:

(1) ऐसी वस्तुओं का विस्तृत उचित पंचनामा तैयार करना;

(2) ऐसी वस्तुओं की तस्वीरें लेना और एक बंधपत्र लेना कि यदि विचारण के समय आवश्यकता हुई तो ऐसी वस्तुएं प्रस्तुत की जाएंगी; और

(3) उचित प्रतिभूति लेने के बाद।

13. इस उद्देश्य के लिए, न्यायालय ऐसे साक्ष्य को दर्ज करने की प्रक्रिया का पालन कर सकता है, जैसा वह आवश्यक समझे, जैसा कि दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 451 के अंतर्गत प्रावधानित है। बंधपत्र और प्रतिभूति इस प्रकार ली जानी चाहिए ताकि साक्ष्य को खोने, बदले जाने या नष्ट होने से रोका जा सके। न्यायालय को यह देखना चाहिए कि ऐसी वस्तुओं की तस्वीरों को शिकायतकर्ता, अभियुक्त के साथ-साथ उस व्यक्ति द्वारा अनुप्रमाणित या प्रतिहस्ताक्षरित किया गया है जिसे अभिरक्षा सौंपी गई है। फिर भी, कोई अन्य उपयुक्त शर्त लगाना दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 451 के अंतर्गत न्यायालय का कार्य होगा।"

8. अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता कहते हैं कि पूर्वोक्त निर्णय दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 451 के अंतर्गत संपत्ति को मुक्त करने से संबंधित था।

9. विद्वान अपर शासकीय अधिवक्ता श्री राहुल अस्थाना ने अपील का विरोध किया है, लेकिन विद्वान अपीलकर्ता और विपक्षी के विद्वान अधिवक्ता द्वारा प्रस्तुत किए गए तर्कों का खंडन नहीं कर सके।

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



10. सभी संबंधित दृष्टिकोणों से मामले पर विचार करने और ऊपर संदर्भित निर्णय पर विचार करने के बाद पक्षकारों के विद्वान अधिवक्ताओं को सुनने के पश्चात, मेरा यह विचार है कि अपीलकर्ता यद्यपि विचारण में एक अभियुक्त था, लेकिन उसे दोषमुक्त कर दिया गया था और उसकी दोषमुक्ति को चुनौती देने वाली कोई अपील प्रस्तुत नहीं की गई है, दूसरी बात, पूछे जाने पर, विद्वान अपर शासकीय अधिवक्ता श्री राहुल अस्थाना ने निष्पक्ष रूप से प्रस्तुत किया कि विधि के किसी भी प्रावधान के अंतर्गत ऐसा कोई आदेश नहीं है जिसके तहत किसी भी कारण से आभूषणों को जब्त करने की आवश्यकता हो और चूंकि विचारण न्यायालय ने दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 452 के अंतर्गत अपीलकर्ता के प्रार्थना पत्र को केवल इस कारण से खारिज कर दिया है कि प्रश्नगत आभूषण शालिनी जो कि शिकायतकर्ता की बहन है के हैं और अपीलकर्ता ने अपने दावे के समर्थन में कोई स्टॉक रजिस्टर, बिल या कैश मेमो प्रस्तुत नहीं किया है, इसलिए, वह असमर्थ था और उसे प्रार्थना पत्र पर विचार करने की अधिकारिता नहीं थी, मेरा यह विचार है कि इस तथ्य को देखते हुए कि अपीलकर्ता को विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा दोषमुक्त कर दिया गया था और दोषमुक्ति के आदेश के विरुद्ध कोई अपील प्रस्तुत नहीं की गई है, अपीलकर्ता के पक्ष में आभूषणों को मुक्त करने में कोई बाधा नहीं है। इसके अलावा, विपक्षी ने प्रश्नगत आभूषणों पर दावा नहीं किया है और प्रश्नगत आभूषणों को मुक्त करने में कोई आपत्ति नहीं जताई है। किसी भी विधि/कानून के अंतर्गत प्रश्नगत आभूषणों को जब्त करने का कोई आदेश अभिलेख पर नहीं है। विद्वान अपर शासकीय अधिवक्ता द्वारा प्रश्नगत आभूषणों को मुक्त न करने का कोई अन्य कारण प्रस्तुत नहीं किया गया है। विचारण पहले ही समाप्त हो चुका है, और उक्त आदेश के विरुद्ध कोई अपील प्रस्तुत नहीं की गई है, इसलिए, मैं कुछ शर्तों के अधीन अपीलकर्ता को आभूषण मुक्त करने से इनकार करने का कोई कारण नहीं देखती हूं।

11. प्रश्नगत आभूषणों को निम्नलिखित शर्तों के अधीन अपीलकर्ता के पक्ष में मुक्त किया जाएगा:-

- (i) प्रश्नगत आभूषणों को मुक्त करने से पहले उनका उचित पंचनामा तैयार किया जाएगा।
- (ii) प्रश्नगत आभूषणों की सभी संभावित कोणों से रंगीन तस्वीरें ली जाएंगी।
- (iii) अपीलकर्ता प्रश्नगत आभूषणों के किसी भी भाग/घटक सहित प्रश्नगत आभूषणों में कोई बदलाव नहीं करेगा और न ही इस न्यायालय की अनुमति के बिना किसी भी रूप में इसे बेचेगा या अन्यसंक्रामित करेगा।

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



(v) अपीलकर्ता संबंधित न्यायालय की संतुष्टि के लिए समान राशि की दो प्रतिभूतियों के रूप में उचित प्रतिभूति प्रस्तुत करेगा, ताकि यदि आवश्यक हो तो पूर्वोक्त विमोचन और प्रस्तुतीकरण सुरक्षित किया जा सके।

(vi) प्रश्नगत आभूषणों की रंगीन तस्वीरों को यहां अपीलकर्ता द्वारा अनुप्रमाणित और प्रतिहस्ताक्षरित किया जाएगा।

(vii) इस संबंध में तैयार किए गए दस्तावेजों की छायाप्रति विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा इस अपील के अभिलेखों पर रखे जाने के लिए इस न्यायालय को भेजी जाएगी।

12. उपर्युक्त के दृष्टिगत, वर्तमान आपराधिक अपील स्वीकार की जाती है। परिणामस्वरूप, विद्वान अपर सत्र न्यायाधीश/विशेष न्यायाधीश डकैती प्रभावित क्षेत्र न्यायालय संख्या 3, आगरा द्वारा प्रार्थना पत्र को खारिज करते हुए पारित आदेश दिनांक 31.10.2022 को एतद्वारा अपास्त किया जाता है।

25 मार्च, 2026

देव

(न्यायमूर्ति श्रीमती वानी रंजन अग्रवाल)